Mains Matrix

Table of Content

1.भारत ने दोहा हमले की निंदा क्यों की?
2.महाराष्ट्र के प्याज़ किसान क्यों कर रहे हैं विरोध?
3.पराली जलाना
4.भारत में प्राथमिक खाद्य खपत को समान बनाना
5.भारत को सतत विकास लक्ष्य 3 (SDG 3) हासिल करने पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है

1. भारत ने दोहा हमले की निंदा क्यों की?

1. पृष्ठभूमि / अब तक की कहानी

- भारत ने 9 सितम्बर 2025 को इज़राइल द्वारा दोहा में किए गए बमबारी की "संप्रभुता के उल्लंघन" के रूप में निंदा की, जो इज़राइल की कार्रवाइयों पर भारत के पहले के अपेक्षाकृत संयमित रुख से अलग है।
- यह सवाल उठा कि क्या भारत ने पश्चिम एशिया संकट पर अपना रुख बदल दिया है।
- संदर्भ:
    - गाज़ा में बढ़ती नागरिक मौतें।
    - भारत के क़तर और खाड़ी क्षेत्र से मज़बूत संबंध।
    - संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सिद्धांतों पर जोर।
    - सऊदी अरब के साथ नया रक्षा समझौता।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

---

2. भारत ने दोहा हमले की निंदा क्यों की?

- **तारीख़:** 16 सितम्बर 2025।
- **संदर्भ:** 9 सितम्बर को दोहा में इज़राइली रक्षा बलों (IDF) की बमबारी, जब हमास नेताओं और अमेरिकी अधिकारियों की बैठक हो रही थी।
- **भारत का रुख:**
    - क्षेत्र की सुरक्षा पर असर को लेकर "गंभीर चिंता" जताई।

    - “क़तर की संप्रभुता का उल्लंघन।”
    - ज़ोर दिया:
        - संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन होना चाहिए।
        - तनाव और वृद्धि से बचना चाहिए।
        - राज्यों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान होना चाहिए।
- यह बयान तब आया जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने क़तर के पीएम/विदेश मंत्री शेख़ तमीम बिन हमद अल थानी से बात कर क़तरी जनता के साथ एकजुटता व्यक्त की।

---

3. यह भारत की पिछली प्रतिक्रियाओं से कैसे अलग है?

- **पहले के संयमित रुख से अंतर:**
    - पहले, भारत शायद ही कभी इज़राइल की अन्य देशों (ईरान, सीरिया, लेबनान) पर बमबारी की निंदा करता था।
    - उदाहरण:
        - अप्रैल 2024 में दमिश्क स्थित ईरानी दूतावास पर इज़राइल की बमबारी → भारत चुप रहा।
        - लेबनान, सीरिया पर इज़राइल के हमले → भारत ने चुप्पी साधी।
- **दोहा हमले पर प्रतिक्रिया:**
    - अधिक मज़बूत और सीधी।
    - संयुक्त राष्ट्र मंचों पर सार्वजनिक निंदा।
    - संप्रभुता सिद्धांत का हवाला।

MENTORA IAS
“YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT”

---

4. क़तर को अलग तरह से क्यों देखा गया?

- **रणनीतिक कारण:**
    - क़तर भारत को गैस का बड़ा आपूर्तिकर्ता है।
    - मज़बूत प्रवासी संबंध → 8.5 लाख भारतीय क़तर में।
    - क़तर में अमेरिकी सैन्य अड्डे हैं।

- पश्चिम एशिया की राजनीति में क़तर अहम है, जहाँ भारत के बड़े हित हैं।

- **कूटनीतिक संतुलन:**
  - भारत को अरब देशों, खाड़ी और इज़राइल — तीनों के साथ रिश्ते संभालने हैं।
  - ईरान/सीरिया के साथ संबंध अपेक्षाकृत कमज़ोर हैं, पर क़तर के साथ संबंध "रणनीतिक और विशेष" हैं।

---

5. क्षेत्रीय और वैश्विक प्रतिक्रियाएँ

- **ईरान:** हमले की निंदा।
- **ओआईसी (इस्लामिक सहयोग संगठन):** दोहा में आपात बैठक, इज़राइल की निंदा।
- **अरब लीग और जीसीसी:** हमले की निंदा, क़तर के साथ एकजुटता।
- **अमेरिका:** सीधी निंदा नहीं की, पर इज़राइल की "सुरक्षा चिंताओं" पर ज़ोर दिया।

---

6. भारत की पश्चिम एशिया नीति के लिए क्या मायने हैं?

- **गाज़ा पर भारत की चुप्पी:**
  - 6,000+ फिलिस्तीनी मौतों (जिनमें 2,000 बच्चे) के बावजूद भारत ने मज़बूत निंदा नहीं की।

- **नीति परिवर्तन के संकेत:**
  - दोहा हमले की निंदा भारत की चयनात्मक दृष्टि को दर्शाती है, जो रणनीतिक संबंध और संप्रभुता सिद्धांत पर आधारित है।
  - गाज़ा पर इज़राइल की कार्रवाइयों को द्विपक्षीय संघर्ष माना गया, संप्रभुता का उल्लंघन नहीं (भारत की व्याख्या)।
  - **संतुलन साधना:**
    - इज़राइल से रक्षा, तकनीक, व्यापार।
    - क़तर और खाड़ी से ऊर्जा, प्रवासी, निवेश।

- **मोदी सरकार का पुनर्संतुलन:**
  - अब विदेश नीति इज़राइल और अरब दुनिया, दोनों के हितों को ध्यान में रखती है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS - OUR COMMITMENT"

- संप्रभुता सिद्धांत पश्चिम एशिया नीति का आधार बन सकता है।

---

7. सार (The Gist)

- भारत ने दोहा में इज़राइल के हमले को संप्रभुता का उल्लंघन बताया।
- मज़बूत रुख क़तर और खाड़ी से भारत के करीबी संबंधों के कारण।
- गाज़ा पर चुप्पी को "अलग संदर्भ" बताकर समझाया गया (संप्रभुता का मामला नहीं)।
- यह भारत के रणनीतिक, क्षेत्रीय और द्विपक्षीय हितों के संतुलन को दर्शाता है।

उपयोग कैसे करें

मुख्य प्रासंगिकता: GS पेपर-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

यह सबसे प्रत्यक्ष रूप से इस खंड में फिट बैठता है: "भारत और उसके पड़ोसी देश – संबंध" तथा "विकसित और विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का भारत के हितों पर प्रभाव।"

---

1. भारत की विदेश नीति: सिद्धांत और विकास

कैसे उपयोग करें:
यह घटना भारत की विदेश नीति में सिद्धांतों की निरंतरता और प्रयोग में बदलाव – दोनों का उदाहरण है।

- **सिद्धांतों की निरंतरता:**
  - भारत की निंदा "संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान" जैसे लंबे समय से चले आ रहे सिद्धांतों पर आधारित थी।
  - यह स्वतंत्रता के बाद से भारत की विदेश नीति की आधारशिला रही है (पंचशील, संयुक्त राष्ट्र चार्टर)।
  - इससे भारत को एक वैश्विक रूप से सम्मानजनक और नैतिक स्थिति लेने का अवसर मिलता है।
- **प्रयोग में बदलाव (रणनीतिक व्यावहारिकता):**
  - बदलाव इस बात में है कि भारत कब और कहाँ इस सिद्धांत का प्रयोग करता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- उदाहरण: भारत ने दमिश्क (सीरिया) और लेबनान में इज़राइल के हमलों पर चुप्पी साधी।
- इस चयनात्मक अनुप्रयोग से दिखता है कि भारत विचारधारा-आधारित विदेश नीति (गुटनिरपेक्षता) से आगे बढ़कर रणनीतिक व्यावहारिकता की ओर बढ़ रहा है।
- अब सिद्धांतों का प्रयोग मुख्य रूप से भारत के राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के लिए किया जाता है।

---

2. पश्चिम एशिया/खाड़ी क्षेत्र में भारत के रणनीतिक हित

कैसे उपयोग करें:
यह लेख भारत की बहुआयामी (multi-vector) पश्चिम एशिया नीति को समझाने के लिए उत्तम उदाहरण है। इससे स्पष्ट होता है कि क़तर क्यों "अलग" है।

- **ऊर्जा सुरक्षा:**
  - क़तर भारत के लिए एलएनजी (Liquefied Natural Gas) का प्रमुख आपूर्तिकर्ता है।
  - क़तर की स्थिरता पर कोई भी खतरा सीधे भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं पर असर डालता है।
- **प्रवासी भारतीय और प्रेषण (Remittances):**
  - क़तर में 8.5 लाख भारतीय रहते हैं।
  - यह भारत के लिए एक जिम्मेदारी (उनकी सुरक्षा) भी है और आर्थिक लाभ (प्रेषण का बड़ा स्रोत) भी।
- **आर्थिक और रक्षा साझेदारी:**
  - सऊदी अरब के साथ नए रक्षा समझौते का उल्लेख दर्शाता है कि भारत खाड़ी देशों के साथ रणनीतिक संबंध और गहरा रहा है।
  - जीसीसी (GCC) के सदस्य क़तर पर हमले की निंदा करके भारत इस महत्वपूर्ण क्षेत्रीय समूह के साथ अपनी स्थिति मजबूत करता है।
- **इज़राइल और अरब जगत के बीच संतुलन:**
  - भारत इज़राइल के साथ खड़े होकर अरब जगत को नाराज़ नहीं कर सकता।
  - अरब देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक और आर्थिक संबंध गहरे हैं।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS OUR COMMITMENT"

- इसलिए यह निंदा संतुलन का संकेत भी है।

2. महाराष्ट्र के प्याज किसान क्यों कर रहे हैं विरोध

महाराष्ट्र, जो भारत का सबसे बड़ा प्याज उत्पादक राज्य है, के किसान विरोध कर रहे हैं क्योंकि बाजार में प्याज की कीमतें गिरकर केवल **₹800–1,000 प्रति क्विंटल** रह गई हैं, जबकि उनकी **उत्पादन लागत ₹2,200–2,500 प्रति क्विंटल** है।

किसानों की मुख्य शिकायतें:

1. सरकार द्वारा कम कीमत पर **बफर स्टॉक की बिक्री** से बाजार दर और नीचे जा रही है।
2. **अस्थिर निर्यात नीतियों** के कारण भारत ने वैश्विक बाजारों में अपनी स्थिति चीन और पाकिस्तान जैसे प्रतिस्पर्धियों के हाथों खो दी है।

किसानों की मांगें:

- सरकार से तुरंत **₹1,500 प्रति क्विंटल सहायता**।
- सरकार द्वारा बफर स्टॉक की बिक्री पर रोक।
- **स्थिर निर्यात नीति** का निर्माण ताकि अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारत की स्थिति वापस मजबूत हो सके।
- राज्य सरकार को अन्य राज्यों के मॉडल अपनाने चाहिए, जैसे आंध्र प्रदेश, जहाँ किसानों की सुरक्षा के लिए **उच्च न्यूनतम मूल्य पर प्याज की सरकारी खरीद** की जाती है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

उपयोग कैसे करें

मुख्य प्रासंगिकता: GS पेपर-III (भारतीय अर्थव्यवस्था)

यह सीधा-सीधा इसी खंड में फिट बैठता है। यह मुद्दा कृषि अर्थशास्त्र, सरकारी नीतियों और किसानों पर उनके प्रभाव से जुड़ा है।

---

1. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कृषि सब्सिडी तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) से जुड़े मुद्दे

कैसे उपयोग करें:
विरोध का मूल कारण आय असमानता है। बाजार मूल्य (₹800–1,000 प्रति क्विंटल) उत्पादन लागत

(₹2,200–2,500 प्रति क्विंटल) से आधे से भी कम है। यह लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने की आवश्यकता का उत्तम उदाहरण है।

- **सहायता की मांग:**
    - ₹1,500 प्रति क्विंटल की सहायता की मांग मूल रूप से प्राइस डेफिशिएंसी पेमेंट स्कीम की मांग है (जैसे PM-AASHA योजना), जिसमें सरकार किसानों को MSP और बाजार मूल्य के अंतर की भरपाई करती है।
- **खरीद मॉडल:**
    - आंध्र प्रदेश मॉडल का संदर्भ राज्य द्वारा उच्च आधार मूल्य पर खरीद की मांग है।
    - यह प्याज के लिए एक प्रभावी MSP की तरह काम करता है।

---

2. कृषि उत्पादों के परिवहन और विपणन से जुड़े मुद्दे एवं बाधाएँ

कैसे उपयोग करें:
यह विरोध कृषि विपणन में गंभीर विफलता को उजागर करता है।

- **सरकारी हस्तक्षेप समस्या के रूप में:**
    - उपभोक्ता कीमतों को नियंत्रित करने के लिए सरकार सस्ते दाम पर बफर स्टॉक बेचती है, लेकिन इससे किसानों की बाजार कीमत और नीचे चली जाती है।
    - यह सीधे उत्पादक (किसान) और उपभोक्ता (शहरी) कल्याण के बीच टकराव पैदा करता है।
- **बाजार अस्थिरता:**
    - प्याज अत्यधिक नाशवान और अस्थिर कीमतों वाली फसल है।
    - यह विरोध इस बात को रेखांकित करता है कि पर्याप्त कोल्ड स्टोरेज और कुशल आपूर्ति श्रृंखला का अभाव है, जिससे किसान मजबूरी में तुरंत बिक्री कर देते हैं।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

---

3. उदारीकरण का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, औद्योगिक नीति में बदलाव और औद्योगिक विकास पर असर

कैसे उपयोग करें:
यह भारत की कृषि निर्यात नीति से जुड़ता है।

- **नीति अस्थिरता:**

- विरोध अस्थिर निर्यात नीतियों (जैसे अचानक निर्यात प्रतिबंध या MEP – न्यूनतम निर्यात मूल्य) को संकट का मुख्य कारण बताता है।
- यह अनिश्चितता भारतीय निर्यातकों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में अविश्वसनीय बना देती है।

- **वैश्विक हिस्सेदारी का नुकसान:**
  - नतीजा यह है कि भारत ने अपना बाजार हिस्सा चीन और पाकिस्तान जैसे प्रतिस्पर्धियों को खो दिया है।
  - यह उपभोक्ता-केंद्रित नीतियों का परिणाम है, जहाँ घरेलू कीमतें नियंत्रित करने के लिए किसानों की संभावित निर्यात आय की बलि दी जाती है।

द्वितीयक प्रासंगिकता: GS पेपर-II (शासन, राजनीति)

1. विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप

कैसे उपयोग करें:
प्याज संकट को नीतिगत दुविधा के रूप में विश्लेषित किया जा सकता है।

- **संतुलन का खेल:**
  - सरकार किसानों की आजीविका बचाने और उपभोक्ताओं (जो कहीं बड़ी मतदाता संख्या है) को महँगाई से बचाने — दोनों जिम्मेदारियों के बीच फँसी हुई है।
- **नीति विफलता:**
  - वर्तमान औज़ार — निर्यात प्रतिबंध और बफर स्टॉक बिक्री — बहुत भद्दे औज़ार हैं।
  - ये उपभोक्ताओं को अल्पकालिक राहत तो देते हैं, लेकिन किसानों की आय और भारत की निर्यात साख को दीर्घकालिक नुकसान पहुँचाते हैं।
  - इससे पता चलता है कि और परिष्कृत नीतिगत औज़ारों की ज़रूरत है।

2. विकास प्रक्रियाएँ और विकास उद्योग

कैसे उपयोग करें:
यह विरोध भारतीय विकास कहानी में लगातार बने रहने वाले कृषक संकट का प्रतीक है।

- यह दिखाता है कि उच्च-मूल्य वाली फसल (प्याज) में भी किसान बाज़ार शक्तियों और नीतिगत अनिश्चितता के कारण कितने असुरक्षित हैं।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS - OUR COMMITMENT"

3. पराली जलाना (Stubble Burning)

यह क्या है

किसानों द्वारा खेतों में आग लगाना ताकि **रबी फसलों की बुवाई** के लिए खेत तैयार हो सकें।

प्रमुख परिणाम

- पराली जलाना अक्टूबर और नवंबर में **दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में गंभीर वायु प्रदूषण** का एक बड़ा कारण है।

समस्या के कारण

- **कृषि अर्थशास्त्र:** कृषि अर्थव्यवस्था की संरचना औसत, कर्ज़दार किसान को बहुत कम विकल्प छोड़ती है।
- **सीमित प्रवर्तन:** पंजाब और हरियाणा में नियमों का अपर्याप्त प्रवर्तन।
- **भ्रामक आँकड़े:** पंजाब ने दावा किया कि खेतों में आग लगाने की घटनाएँ कम हो रही हैं, जबकि वास्तव में वे बढ़ रही थीं, और जिम्मेदार आयोग (CAQM) ने यह उजागर नहीं किया।

संस्थागत प्रतिक्रिया और उसकी विफलताएँ

- **वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM):**
    - एक केंद्रीय निकाय के रूप में सकारात्मक कदम, जिसके पास राज्यों के पार काम करने की शक्ति है।
    - **विफलताएँ:**
        - राजनीतिक दबाव से स्वतंत्र होकर काम नहीं कर पाया।
        - उदाहरण: NCR में प्रदूषणकारी वाहनों पर प्रतिबंध लागू करने में देरी और नरमी, सार्वजनिक और राजनीतिक विरोध के चलते।
        - न्यायपालिका के सामने पराली जलाने के मूल कारणों को प्रभावी ढंग से पेश करने में असफल।

प्रस्तावित समाधान और उनकी आलोचना

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **खराब सुझाव:** किसानों पर मुकदमा चलाना और जेल भेजना एक निवारक उपाय के रूप में सुझाया जा रहा है, लेकिन इसे अप्रभावी और आश्चर्यजनक समाधान माना गया।
- **सिफारिशित समग्र दृष्टिकोण (बहु-आयामी रणनीति):**
    1. **बेहतर प्रोत्साहन दें:** किसानों को व्यवहार्य और सस्ते विकल्प उपलब्ध कराएँ।
    2. **मौजूदा कानून लागू करें:** पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में प्रवर्तन तंत्र को मजबूत करें।
    3. **पारदर्शी बनें:** इस समस्या का मूल्यांकन करने और यथार्थवादी लक्ष्य तय करने के लिए एक पारदर्शी तंत्र बनाएँ।

समग्र निष्कर्ष

- इस लंबे समय से चले आ रहे मुद्दे को निपटाने के लिए केंद्र के प्रयास अधूरे रहे हैं।
- **समग्र रणनीति** अपनाना ज़रूरी है, जिसमें प्रोत्साहन, प्रवर्तन और पारदर्शिता पर ध्यान हो, न कि केवल "डंडा और गाजर" जैसे सरल उपायों पर।

4. भारत में प्राथमिक खाद्य उपभोग को समान करना

1. मुख्य तर्क और प्रमुख निष्कर्ष

- विश्व बैंक का यह अनुमान कि 2022-23 में गरीबी दर केवल 2.3% है, भारत में खाद्य वंचना (Food Deprivation) की वास्तविकता को सही तरीके से प्रतिबिंबित नहीं करता।
- "थाली" (संतुलित भोजन) को उपभोग मापदंड के रूप में उपयोग करने से कहीं अधिक गंभीर तस्वीर सामने आती है: ग्रामीण आबादी का लगभग 50% और शहरी आबादी का 20% अपनी बताई गई खाद्य व्यय के आधार पर **दो थाली प्रतिदिन** भी वहन नहीं कर पाते।

---

2. "थाली" मापदंड: वंचना मापने का नया तरीका

- **परिभाषा:** थाली भोजन की एक समग्र इकाई है, जिसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और विटामिन शामिल हैं, और जो केवल कैलोरी तक सीमित नहीं है।
- **लागत:** घर पर पकाई गई एक थाली की कीमत लगभग ₹30 है।
- **न्यूनतम मानक:** प्रतिदिन दो थाली को न्यूनतम स्वीकार्य मानक माना गया है।

- **पद्धति:** यह विश्लेषण कुल आय पर नहीं बल्कि वास्तविक खाद्य व्यय पर आधारित है, क्योंकि परिवारों के पास किराया, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन जैसी अन्य आवश्यक लागतें भी होती हैं।

---

3. सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) का प्रभाव

- **वर्तमान प्रभाव:** PDS सब्सिडी (खरीदी गई और मुफ्त दोनों) को शामिल करने पर वंचना दर ग्रामीण क्षेत्रों में 40% और शहरी क्षेत्रों में 10% रह जाती है। यह दर्शाता है कि PDS मदद करता है, लेकिन समस्या को खत्म नहीं करता, खासकर ग्रामीण भारत में।
- **सब्सिडी लक्ष्यीकरण की कमी:**
    - **ग्रामीण भारत:** सब्सिडी का लक्ष्यीकरण कमजोर है। आय समूह 90-95% का व्यक्ति, सबसे गरीब 0-5% को मिलने वाली सब्सिडी का 88% प्राप्त करता है, जबकि उसका उपभोग व्यय तीन गुना अधिक है।
    - **शहरी भारत:** सब्सिडी अपेक्षाकृत प्रगतिशील है, लेकिन फिर भी लगभग 80% आबादी को लाभ मिलता है, जिनमें वे भी शामिल हैं जो दो थालियों से अधिक वहन कर सकते हैं।

---

4. वर्तमान PDS मॉडल की सीमाएँ

- **अनाज की सफलता और ठहराव:** सभी आय समूहों में अनाज (चावल/गेहूँ) का उपभोग अब लगभग समान है। यह दर्शाता है कि PDS ने **मुख्य खाद्य पदार्थों को बराबर करने में सफलता** हासिल की है।
- **10% समस्या:** अब अनाज औसत घरेलू व्यय का केवल 10% हिस्सा है। मौजूदा PDS, जो अनाज पर केंद्रित है, व्यापक खाद्य वंचना से निपटने में अपनी सीमा तक पहुँच चुका है।
- **दलहन की कमी:** दलहन उपभोग में बड़ी असमानता है। सबसे गरीब 0-5% समूह, सबसे अमीर 95-100% की तुलना में प्रति व्यक्ति आधा ही उपभोग करता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

---

5. नीति प्रस्ताव: PDS का पुनर्गठन

- **मुख्य विचार:** सार्वभौमिक अनाज सब्सिडी से हटकर एक लक्षित प्रणाली अपनाई जाए, जिसमें खाद्य टोकरी (food basket) को दलहन तक विस्तारित किया जाए।
- **कैसे करें:**

1. **अनाज की हिस्सेदारी घटाएँ:** उन लोगों के लिए अनाज आवंटन कम करें जो पहले से ही वांछित स्तर पर उपभोग कर रहे हैं (विशेषकर उच्च-आय समूह)।
2. **ऊपरी वर्ग की सब्सिडी समाप्त करें:** उन परिवारों को सब्सिडी देना बंद करें जिनका खाद्य उपभोग उचित मानक (जैसे दो थाली प्रतिदिन) से अधिक है।
3. **दलहन जोड़ें:** बचाए गए संसाधनों का उपयोग PDS के माध्यम से दलहन वितरण के लिए करें, ताकि सभी आय समूहों में उपभोग बराबर किया जा सके।

- **अपेक्षित लाभ:**
    - **संक्षिप्त और प्रभावी:** PDS को अधिक लक्षित और कुशल बनाएगा।
    - **प्रोटीन की कमी का समाधान:** गरीबों को आवश्यक प्रोटीन स्रोत मिलेगा।
    - **राजकोषीय बचत:** भारतीय खाद्य निगम (FCI) के भंडारण की आवश्यकता कम होगी और सार्वजनिक धन का अधिक कुशल उपयोग होगा।
    - **वैश्विक महत्व का परिणाम:** सबसे गरीब परिवारों का प्राथमिक खाद्य उपभोग अर्थव्यवस्था में देखे गए सर्वोच्च स्तर तक पहुँच सकता है।

मुख्य उपयोग –

प्राथमिक प्रासंगिकता: GS Paper II (शासन, संविधान, राजनीति, सामाजिक न्याय)

यह सीधे तौर पर **"कल्याणकारी योजनाओं"** और **"गरीबी व भूख से संबंधित मुद्दों"** के अंतर्गत आता है।

1. गरीबी और भूख से संबंधित मुद्दे:

- **कैसे उपयोग करें:** यह लेख पारंपरिक गरीबी मापन पर एक सशक्त आलोचना प्रस्तुत करता है।
    - **आय-आधारित गरीबी से परे:** "थाली मेट्रिक" का उपयोग यह दिखाने के लिए करें कि आय आधारित गरीबी रेखाएँ (जैसे विश्व बैंक का $2.15/दिन) भ्रामक हो सकती हैं। ये यह नहीं दिखातीं कि कोई व्यक्ति पोषक भोजन वहन कर पा रहा है या नहीं। यह भूख की अधिक सूक्ष्म समझ प्रदान करता है।
    - **बहुआयामी गरीबी:** यह अवधारणा **बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI)** से मेल खाती है, जो स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर को देखता है। "थाली" तर्क इसमें खाद्य विविधता और गुणवत्ता का नया पहलू जोड़ता है।

2. विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिए सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप:

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **कैसे उपयोग करें:** यह भारत की सबसे महत्वपूर्ण कल्याणकारी योजना—**सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS)**—का आलोचनात्मक विश्लेषण है।
    - **PDS की सफलता:** यह स्वीकार करें कि इसने सभी आय समूहों में अनाज उपभोग को बराबर किया और अकाल रोका। यह सार्वजनिक नीति की बड़ी सफलता है।
    - **PDS की सीमाएँ:**
        - **कमज़ोर लक्ष्यीकरण:** ग्रामीण क्षेत्रों में अमीरों को भी गरीबों के बराबर सब्सिडी मिल रही है—यह प्रगतिशीलता की बड़ी आलोचना है।
        - **बदलते उपभोग पैटर्न:** अब अनाज केवल 10% व्यय है। PDS विविध आहार (दलहन, प्रोटीन) की ज़रूरतों के अनुरूप नहीं है।
    - **नीति प्रस्ताव:** सार्वभौमिक अनाज सब्सिडी से हटकर दलहन-समावेशी लक्षित खाद्य टोकरी की ओर बढ़ने का सुझाव एक ठोस और प्रमाण-आधारित समाधान है, जिसे आप **खाद्य सुरक्षा** पर किसी भी उत्तर में लिख सकते हैं।

प्राथमिक प्रासंगिकता: GS Paper III (भारतीय अर्थव्यवस्था)

यह मुद्दा **संसाधन संचलन, सब्सिडी और समावेशी विकास** की चर्चा का केंद्र है।

1. भारतीय अर्थव्यवस्था और योजना, संसाधनों के संचलन, विकास व रोजगार से जुड़े मुद्दे:

- **कैसे उपयोग करें:** यह लेख **सार्वजनिक संसाधनों (सब्सिडी) के कुशल उपयोग और संचलन** पर आधारित है।
    - **राजकोषीय दक्षता:** "अनाज हिस्सेदारी घटाना" और "ऊपरी वर्ग की सब्सिडी खत्म करना" सब्सिडी को तार्किक बनाने का उदाहरण है। इससे सरकार का राजकोषीय बोझ (जैसे FCI की भंडारण लागत) घटेगा और योजनाएँ अधिक प्रभावी होंगी।
    - **समावेशी विकास:** इस नीति का अंतिम लक्ष्य गरीबों को अमीरों जैसी पोषण गुणवत्ता उपलब्ध कराकर अधिक न्यायसंगत विकास हासिल करना है।

2. खाद्य सुरक्षा:

- **कैसे उपयोग करें:** यही इस लेख का केंद्रीय विषय है।
    - खाद्य सुरक्षा को केवल **उपलब्धता (enough food)** और **पहुंच (ability to buy)** के बजाय **शोषण/अवशोषण (nutritional quality)** के रूप में भी परिभाषित करें।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- "दलहन अंतर" (pulses gap) अवशोषण पहलू की विफलता दर्शाता है, जिसके कारण पर्याप्त कैलोरी सेवन होने के बावजूद छिपी हुई भूख और कुपोषण बना रहता है।

5. भारत को SDG 3, एक महत्वपूर्ण लक्ष्य, हासिल करने पर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत

1. भारत में SDG 3 की वर्तमान स्थिति

- **समग्र SDG प्रगति:** भारत की रैंक 2024 में 109 से सुधरकर 2025 SDG इंडेक्स में 99/167 हो गई है, जो बुनियादी सेवाओं और अवसंरचना में प्रगति दर्शाती है।
- **SDG 3 (स्वस्थ जीवन और कल्याण को बढ़ावा देना):** प्रगति असमान है और अधिकांश 2030 लक्ष्यों पर अभी पटरी पर नहीं है, विशेषकर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में।
- **मुख्य कमियाँ:**
  - मातृ मृत्यु दर (MMR): 97/100,000 (लक्ष्य: 70)
  - 5 वर्ष से कम आयु मृत्यु दर: 32/1,000 जीवित जन्म (लक्ष्य: 25)
  - औसत आयु: 70 वर्ष (लक्ष्य: 73.63)
  - जेब से स्वास्थ्य खर्च: कुल उपभोग का 13% (लक्ष्य: 7.88%)
  - टीकाकरण कवरेज: 93.23% (लक्ष्य: 100%)

---

2. अंतराल के कारण

- **पहुंच की कमी:** खराब स्वास्थ्य अवसंरचना और आर्थिक बाधाओं के कारण।
- **ग़ैर-आर्थिक कारक:** कुपोषण, स्वच्छता की कमी, अस्वास्थ्यकर जीवनशैली।
- **सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाएँ:** शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर कलंक और जागरूकता की कमी सेवाओं के उपयोग को रोकती हैं।

---

3. प्रस्तावित तीन-स्तरीय दृष्टिकोण

उपचार और रोकथाम पर संयुक्त ध्यान आवश्यक है।

1. सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **लक्ष्य:** तबाही लाने वाले स्वास्थ्य खर्च को कम करना और समान पहुंच सुनिश्चित करना।
- **साक्ष्य:** विश्व बैंक के अध्ययनों से साबित है कि मजबूत बीमा प्रणाली यह हासिल करती हैं।

2. प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा और डिजिटल उपकरणों को मज़बूत करना

- **लक्ष्य:** उच्च-गुणवत्ता वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और समन्वित देखभाल।
- **लाभ:** रोग की जल्दी पहचान, अस्पताल खर्च में कमी, बेहतर दीर्घकालिक परिणाम (WHO)।
- **डिजिटल भूमिका:** टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँच अंतराल को कम कर सकते हैं (लैंसेट डिजिटल हेल्थ कमीशन का साक्ष्य)।

3. विद्यालयों में अनिवार्य स्वास्थ्य शिक्षा

- **लक्ष्य:** पोषण, स्वच्छता, प्रजनन स्वास्थ्य, सड़क सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य पर शिक्षा के माध्यम से रोगों की रोकथाम।
- **दीर्घकालिक प्रभाव:** बचपन में बने स्वस्थ आदतें जीवन भर रहती हैं। शिक्षित लड़कियाँ माताएँ बनकर परिवार में स्वास्थ्य की पैरोकार बनती हैं → इससे MMR, 5 वर्ष से कम मृत्यु दर, सड़क दुर्घटनाओं में कमी और जीवन प्रत्याशा व टीकाकरण दर में वृद्धि हो सकती है।
- **वैश्विक साक्ष्य:**
    - फ़िनलैंड (1970s): पोषण और जीवनशैली पर विद्यालय सुधारों से हृदय रोगों की दर कम हुई।
    - जापान: अनिवार्य स्वास्थ्य शिक्षा से बेहतर स्वच्छता और लंबी आयु प्रत्याशा।

---

4. कार्यवाई की अपील

- **नीति-निर्माताओं के लिए:** विद्यालय पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा शामिल करें, सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज में निवेश करें और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा को मज़बूत करें।
- **माता-पिता के लिए:** विद्यालय पाठ्यक्रम की समीक्षा करें और शिक्षा विभागों से स्वास्थ्य विषयों को शामिल करने की मांग करें।
- **समग्र दृष्टिकोण:** 2030 SDG की समयसीमा महत्वपूर्ण है, लेकिन असली लक्ष्य एक **स्वस्थ भारत** का निर्माण है जो **विकसित भारत 2047** की नींव बनेगा।

मुख्य उपयोग –

प्राथमिक प्रासंगिकता: GS Paper II (शासन, संविधान, राजनीति, सामाजिक न्याय)

यह सीधे तौर पर **"स्वास्थ्य से जुड़े सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन के मुद्दे"** तथा **"कल्याणकारी योजनाओं"** के अंतर्गत आता है।

1. स्वास्थ्य के विकास हेतु सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप:

- **कैसे उपयोग करें:** पूरा नोट भारत की स्वास्थ्य नीति के प्रदर्शन का **वैश्विक मानकों (SDGs)** के संदर्भ में मूल्यांकन है।
    - **डेटा-आधारित विश्लेषण:** विशिष्ट कमी के आँकड़ों (जैसे MMR: 97 बनाम लक्ष्य 70, OOPE: 13% बनाम लक्ष्य 7.88%) का उपयोग करें ताकि उत्तर सामान्य से हटकर विशिष्ट और ठोस लगे।
    - **मौजूदा योजनाओं की आलोचना:** इसे **आयुष्मान भारत (PM-JAY)** जैसी योजनाओं से जोड़ें। यह योजना सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा का लक्ष्य रखती है, लेकिन ऊँचा OOPE कवरेज, जागरूकता या आउटपेशेंट खर्च शामिल न होने की खामी को दर्शाता है।
    - **समाधान ढाँचा:** प्रस्तावित तीन-स्तरीय दृष्टिकोण (बीमा, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा) स्वास्थ्य संबंधी किसी भी उत्तर में सुधार सुझाव के लिए तैयार ढाँचा है।

2. शासन के महत्वपूर्ण पहलू:

- **कैसे उपयोग करें:** खामियाँ पारदर्शिता, जवाबदेही और शासन की प्रभावशीलता से जुड़ी समस्याएँ दिखाती हैं।
    - ऊँचा OOPE वित्तीय जोखिम से सुरक्षा प्रदान करने में विफलता दर्शाता है, जो अच्छे शासन का प्रमुख उद्देश्य है।
    - सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाएँ (कलंक, जागरूकता की कमी) योजनाओं की संचार प्रणाली और अंतिम स्तर तक पहुँच की विफलता को दिखाती हैं।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

मजबूत प्रासंगिकता: GS Paper III (भारतीय अर्थव्यवस्था)

यह विषय मानव पूँजी, विकास और सार्वजनिक वित्त का केंद्रीय हिस्सा है।

1. भारतीय अर्थव्यवस्था और योजना, संसाधनों के संचलन, विकास और रोजगार से जुड़े मुद्दे:

- **कैसे उपयोग करें:** स्वास्थ्य मानव पूँजी निर्माण की बुनियाद है।
    - खराब स्वास्थ्य परिणाम (ऊँची मृत्यु दर, कम जीवन प्रत्याशा) कम उत्पादक कार्यबल की ओर ले जाते हैं, जिससे आर्थिक विकास बाधित होता है।

- ऊँचा OOPE गरीबी का प्रमुख कारण है और परिवारों को शिक्षा तथा पूँजी निर्माण में निवेश से रोकता है, जिससे **गरीबी का दुष्चक्र** बनता है।

2. गरीबी और भूख से संबंधित मुद्दे:

- **कैसे उपयोग करें:** स्वास्थ्य और गरीबी के बीच सीधा संबंध है।
    - ऊँचे OOPE से उत्पन्न **विनाशकारी स्वास्थ्य व्यय** परिवारों को गरीबी रेखा के नीचे धकेलने का प्राथमिक कारण है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"